

## पिक्चर बुक में चित्रों को 'पढ़ना'



क्या आप अपने छात्रों के समक्ष पिक्चर बुक का मुखर वाचन करते हैं? यदि हाँ, तो आपने उनमें पाठ और चित्रों के बीच दिलचस्प संवाद पर गौर किया होगा।

चित्र पुस्तकों में सीमित स्थान होने की वजह से, चित्रण की भूमिका अहम् हो जाती है – इनसे पाठक किताब द्वारा रची हुई दुनिया में तत्क्षण प्रवेश कर जाते हैं। और इसके अलावा “साहित्य और दृश्य कला का अनोखा संयोजन भी गंभीरता से गौर करने लायक है” (सिप, 2001, पृ.24)। कई बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली कला का पहला एक्सपोजर पिक्चर बुक के माध्यम से ही होता है। शब्दों को पढ़ने के समान ही बच्चों को चित्रों को “पढ़ना” भी सीखना होगा – ताकि वे समझ सकें की चित्र क्या दर्शाते हैं; और कला तथा डिज़ाइन के तत्वों के असर पर चिन्तन करते हुए इस तथ्य की सराहना कर सकें की कैसे पाठ और चित्र/दृश्य एक साथ मिलकर अर्थ निर्माण करते हैं। चित्रों/दृश्यों को समझने, उनकी सराहना कर सकने की और उनका कैसे उपयोग करना है, इसको समझ सकने की क्षमता को दृश्य साक्षरता कहते हैं (मतुल्का 2008)।

चित्रण की चर्चा करने के लिए आप अपने कक्षा की गतिविधियों को आवश्यकतानुसार अनुकूलित कर सकते हैं। उदहारण के लिए अपने मुखर वाचन सत्र के दौरान आप यह सुनिश्चित करें की आप वाचन करते हुए चित्रों/दृश्यों को दिखाते रहें और उनपर भी बात चीत करते रहें। आप उन्हें दिखाएं कि कैसे आप चित्रों को पाठ से जोड़ते हैं और छात्रों को उन प्रतिक्रियाओं के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करें जो चित्रों को देखकर उनके मन में उभरती हैं।

इस हैंडआउट में, हम चित्रण और डिज़ाइन के प्रमुख पहलुओं को प्रस्तुत करेंगे जिन्हें आप अपने छात्रों को चित्र पुस्तकों में सराहना करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। समय के साथ, छात्र उन पुस्तकों के अर्थ निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेंगे जिन्हें वे पढ़ रहे हैं साथ ही "कैसे शब्दों और कला के संयोजन से न केवल उनके दृश्य की अभिवृद्धि होती है, बल्कि वे कैसा महसूस करते हैं इसकी भी अभिवृद्धि के बारे में सचेत/अवगत होंगे" (वोल्फ, 2004, पृ.252)।

<sup>1</sup>इस हैंडआउट/सारपत्र में हम सिर्फ चित्र पुस्तकों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे, जो की बच्चों की चित्रण वाली के अन्य पुस्तकों से अलग होती हैं, जैसे सचित्र कहानियों की किताबें। मोटे तौर पर हम चित्र पुस्तकों को वैसी पुस्तकों के रूप में परिभाषित करते हैं जिनमें चित्र भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने शब्द, या फिर कभी कभी चित्र शब्दों से ज़्यादा महत्वपूर्ण भी हो सकते हैं। पाठ के विभिन्न पहलू (कहानी, अवधारणा, विषय आदि) और चित्रण/चित्र (कला और डिज़ाइन) पाठक को सम्पूर्ण अनुभव और अर्थ प्रदान करने के लिए एक इकाई के रूप में एक साथ आ जाते हैं (सिप, 2001 से अनुकूलित)।

## चित्रण में कथात्मक अनुक्रम

संभवतः अपने छात्रों के साथ चित्रण पर चर्चा करने में सबसे महत्वपूर्ण बात, उन्हें यह महसूस कराना है कि "बच्चों की किताबों में चित्रण एक **धारावाहिक** कला का रूप है" (श्वार्च और श्वार्क्स, 1991, जैसा कि सिप, 2001, पृ.35 में उद्धृत है)। उन्हें कहानी के अनुक्रम में एक-दूसरे से जोड़कर देखना होता है।

यह 'पिक्चर रीडिंग' गतिविधि से अलग है जिसमें आप छात्रों से किसी एक दृश्य के बारे में बात करते हैं या असंबंधित दृश्यों की एक श्रृंखला के बारे में बात करते हैं। कक्षा की बातचीत को प्रोत्साहित करने के लिए पिक्चर रीडिंग एक मजेदार तरीका हो सकता है, लेकिन यह बच्चों को चित्र पुस्तकों में चित्रण के अनुक्रम के प्रति संवेदनशील बनाने में मदद नहीं करता है। मेनन एवं अन्य (2017) ने पाया कि बच्चे इन कड़ियों को स्वतः नहीं जोड़ते हैं। सीखने के उपयुक्त अनुभव के न होने पर, वे फ्रेम दर फ्रेम चित्रों को पढ़ने की कोशिश करने लगते हैं।

एक रणनीति जिसे आप मुखर वाचन के दौरान उपयोग करने पर विचार कर सकते हैं, वह है 'पिक्चर वॉक थ्रू (picture walk through)' के साथ शुरू करना। बच्चे चित्रों को पढ़ सकते हैं और आपके पाठ के परिचय कराने से पहले कहानी सुना सकते हैं।

## चित्रों तथा शब्दों के बीच सम्बन्ध

बच्चों की किताबों में चित्रण की एक अहम भूमिका होती है, लेकिन पाठ से चित्रों का कैसा सम्बन्ध होगा यह अलग अलग किताब के साथ अलग अलग हो सकता है, यहाँ तक की एक ही किताब के अन्दर भी भिन्नताएं हो सकती हैं। दृष्टांत/चित्रण हो सकते हैं:

- पाठ से सुसंगत
- पाठ के पूरक
- पाठ से अलग (मटुल्का, 2008)

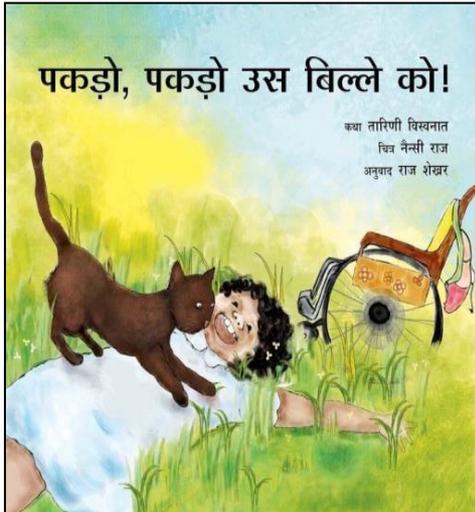
एक **सुसंगत संबंध** में, शब्द और चित्र एक ही कहानी को बताते हैं। बेशक, चित्रों में ऐसे विवरण हो सकते हैं जो पाठ में नहीं हैं, लेकिन ये कथन के लिए आवश्यक नहीं हैं (उदाहरण के लिए सेटिंग के पृष्ठभूमि पहलू या अतिरिक्त पात्र)।



"चलो माँ घर चलें!" अनु ने पैर पटकते हुए कहा।  
 "क्यों अनु, गुड़िया अच्छी नहीं लगी तुम्हें?" मौसी ने पूछा।  
 "छी!:" अनु बोली, "भौंठू लड़की, चढ़ी में छिछी करती है! बात भी नहीं करती, खेलती भी नहीं! मुझे आपकी गुड़िया अच्छी नहीं लगी। आप अपने लिये ऐसी बुद्धू लड़की क्यों लेके आयीं?"

चित्र 1: जूई मौसी की बेटी से एक दृश्य

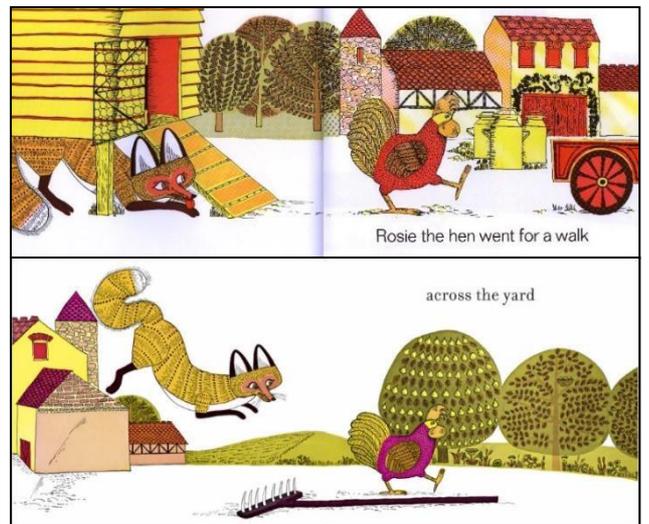
इसका ये मतलब नहीं कि ये विवरण पढ़ने के अनुभव को और बेहतर नहीं करते। अच्छी तरह से किया जाए, तो ये हमें उस कल्पना की दुनिया में ले जाते हैं जिसमें कहानी आगे बढ़ती है और साथ ही कुछ ऐसे रोचक विवरण भी देते हैं जो पाठ में नहीं मिलते। उदाहरण के लिए, चित्र 1, जो जुई मौसी की बेटी से लिया गया है, नवजात बच्चे के बारे में लड़की की शिकायतों को सुनकर वयस्कों की हंसी को व्यक्त करता है। पाठ में इसका कोई जिक्र नहीं है।



चित्र 2 . पकड़ो पकड़ो उस बिल्ले को से एक दृश्य

एक पाठ से अलग में, शब्द और चित्र एक दूसरे के विपरीत अर्थ व्यक्त करते हैं या उनका संयोजन पूरी तरह से नया अर्थ बनाता है। यह पाठक को अनुमान लगाने/ देखकर समझने के लिए प्रेरित करता है कि कहानी में वास्तव में क्या हो रहा है। उदाहरण के लिए, 'रोजी की वॉक'<sup>2</sup> पुस्तक में, पाठ केवल खेत में मुर्गी के चलने का वर्णन करता है (केवल 32 शब्दों में!) लेकिन चित्र पूरी तरह से अलग ही एंगल/दृष्टिकोण (चित्र 3) प्रस्तुत करते हैं। हर फ्रेम में, लोमड़ी मुर्गी पर झपटने की कोशिश कर रही है और उसके असफल प्रयास कहानी को हास्यप्रद बनाते हैं।

एक दूसरे के पूरक के रूप में चित्र पाठ को खास तरीकों से बढ़ाते या विस्तार देते हैं। पुस्तक, पकड़ो पकड़ो उस बिल्ले को, को देखते हैं (चित्र 2)। पाठ के पहले कुछ पन्नों में कहीं भी मुख्य पात्र की दिव्यानाता/विकलानाता या व्हीलचेयर के बारे में कोई चर्चा नहीं की गयी है। चित्र हमें इस महत्वपूर्ण पहलू को दिखाते हैं और चरित्र की विचित्रताओं को बेहतर ढंग से सराहने में हमारी मदद करते हैं।



<sup>2</sup> प्रथम बुक्स, 2011. माधुरी पुरंदरे द्वारा लिखित एवं चित्रित। 'आंटी जुई की बेबी', अंग्रेजी में।

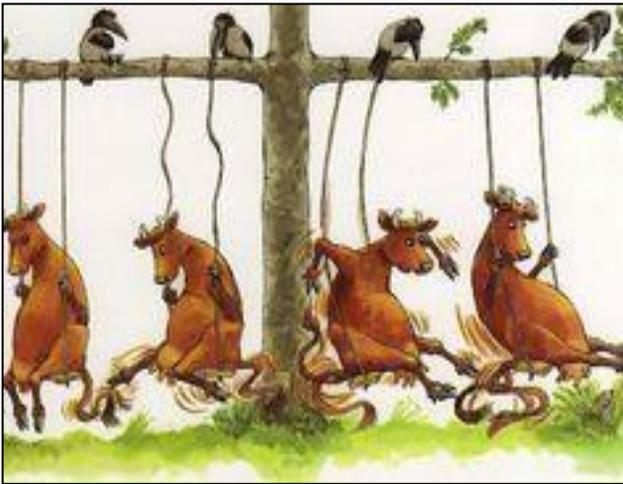
<sup>3</sup> तुलिका, 2013. थारिनी विश्वनाथ द्वारा लिखित और नंसी राज द्वारा चित्रित। 'कैच दैट कैट!' अंग्रेजी में।

<sup>4</sup> साइमन एंड शूस्टर, 1968। पैट हचिंग्स द्वारा लिखित एवं चित्रित।

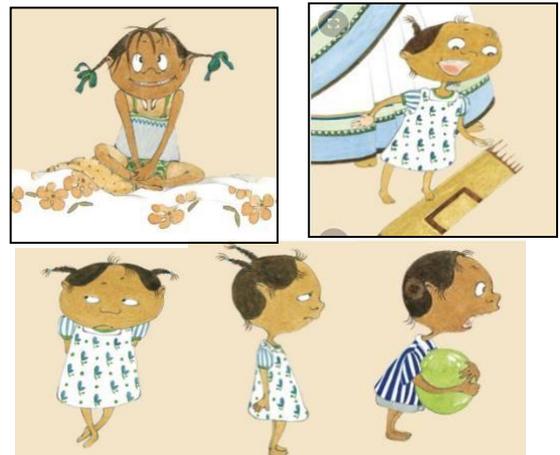
छात्रों के साथ पुस्तकों पर चर्चा करने के दौरान, पाठ और चित्रों के बीच के रोमांचक मेल पर उनका ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करें। आप उनसे पूछ सकते हैं कि क्या चित्रण और पाठ एक ही चीज़ की बात करे रहे हैं या फिर चित्रों से कुछ और ही प्रतीत होता है। क्या विवरण उन्हें यह देखने में मदद करते हैं कि कहानी कहाँ पर घटित हो रही है? कैसे? क्या पाठ और चित्र समान भावनाओं को उजागर करते हैं? क्या दोनों के बीच का परस्पर संवाद कहानी को और दिलचस्प बनाता है? क्यों?

### चरित्र चित्रण

अच्छे चित्रकार ऐसे पात्रों का सृजन करते हैं जिनपर पाठक को विश्वास हो जाता है और जिन पात्रों से पाठक स्वयं को जोड़ कर देखते हैं। आप अपने छात्रों से पूछ सकते हैं कि क्या किताब में दर्शाए गए मनुष्य या जानवर के चरित्र उन्हें वास्तविक लगते हैं। क्या उनकी कोई अनोखी विशेषता है? क्या इन पात्रों का चित्रण करने में चित्रकार ने अपनी कल्पनाशीलता दिखाई है? *कजरी गाय* किताबों<sup>5</sup> के विषय में सोचिये। चित्र 4 इस बात का उदाहरण है कि इस गाय को उन चीज़ों को करते हुए दिखाया गया है जिन्हें हम सामान्य रूप से मनुष्यों से जोड़ते हैं। गाय का व्यक्तित्व चित्रों के माध्यम से निखर कर सामने आता है।



चित्र 4. *कजरी गाय* से एक दृश्य अलग अलग भावनाएं



चित्र 5. *जुई मौसी की बेटी* में चरित्र मुख्य पात्र की

क्या ये चित्रण पात्रों की विशिष्टताओं/विचित्रताओं या आदतों के बारे में जानकारी देते हैं? (उदाहरण के लिए

*पकड़ो पकड़ो उस बिल्ले को* में डिप डिप का जीभ बाहर निकालना, जब वह कुछ गहन सोच विचार करती है)

क्या समय के साथ चरित्र में कोई विकास/बदलाव हुआ है? कहानी आगे बढ़ने पर क्या आप पात्रों को विभिन्न भावनाओं से गुजरते हुए देख सकते हैं? चित्र 5 में *जुई मौसी की बेटी* में लड़की पहली बार एक नवजात से मिलने की संभावना पर उत्साहित महसूस करती है, लेकिन धीरे-धीरे बच्चे को मिलने वाले ध्यान से उसे ईर्ष्या हो जाती है और गुस्सा आता है। चित्रों में पात्रों की भावनाओं को पहचानने के लिए अपने छात्रों को प्रोत्साहित करें।

<sup>5</sup>ए एंड ए किताबों द्वारा भारत में प्रकाशित, 2010. मूल श्रृंखला जुजा वेसलैंडर द्वारा 'मामा मू' स्वीडिश में और स्वेन नोर्डकविस्ट द्वारा चित्रित।

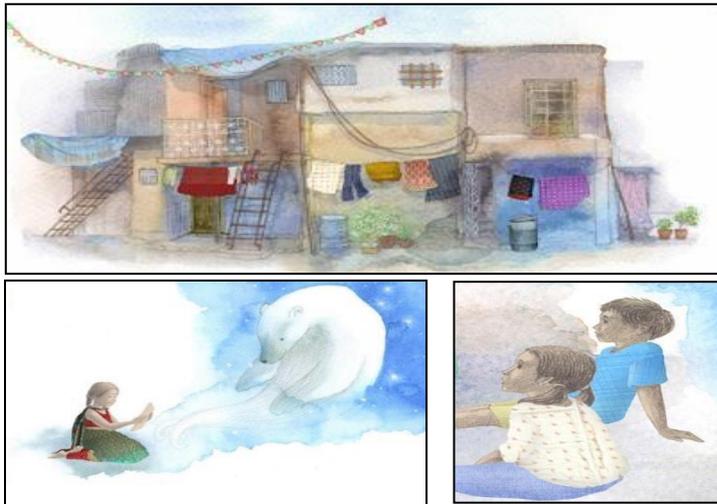
चित्रण में रूढ़ियों पर चर्चा करें, और छात्रों को उन उदाहरणों की सराहना करने के लिए प्रोत्साहित करें जिनमें व्यक्तियों और समूहों को एक सम्मानजनक ढंग से दिखाया जाता है।

### कला के तत्व

धीरे धीरे, छात्रों को रेखा, रंग, आकार, बनावट या पैटर्न, तकनीक, माध्यम और चित्रकार की शैली जैसे कला के विभिन्न तत्वों से परिचित करा सकते हैं। कहानियों में चित्रकार वस्तुओं और दृश्यों को प्रायः वैसे ही चित्रित नहीं करते हैं जैसे वे वास्तव में दिखाई देते हैं, बल्कि वे कला और डिज़ाइन के तत्वों के माध्यम से पाठकों के अनुभव व भावनाओं को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, पाश्चात्य संस्कृति के पिक्चर बुक में नीले रंग से शांति, पीले से खुशी और लाल से क्रोध या जोश दर्शाया जाता है। उसी प्रकार, रंगों का अभाव या विरोधाभासी रंग से भी अलग प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। वैसे ही, नुकीली आकृतियाँ चिंता दर्शाती हैं जबकि गोल आकृतियाँ हमें सुरक्षित महसूस कराती हैं (साइप, 2001; बैंग 2000)। तकनीकी और माध्यम के लिहाज़ से, गाढ़े पेंसिल लाइन के बजाय वॉटर कलर या हल्का रंग कोमल और याद ताज़ा करने वाली कहानी के लिए ज़्यादा उपयुक्त होती है।

कला के इन तत्वों से मनोभाव और समझ पर पड़ने वाले प्रभाव को पहचानने में छात्रों की मदद की जा सकती है। आप अलग-अलग किताबों में कला के इन तत्वों का अंतर दिखाकर चर्चा कर सकते हैं कि चित्रकार का चुनाव विषय वस्तु के अनुकूल है या नहीं।

उदाहरण के लिए, नबिया<sup>6</sup> (चित्र 6) और गीत का कमाल<sup>7</sup> (चित्र 7) में चित्रण के माध्यम से उत्पन्न अनुभूति और मनोभाव का फ़र्क देखिए



Figures 6. Illustrations from *Nabiya*

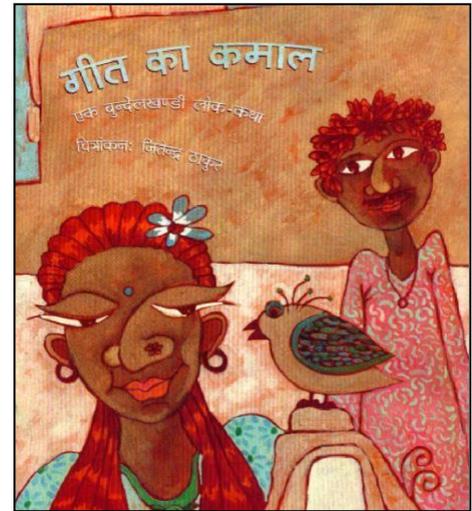


Figure 7. Cover of *Geet ka Kamaal*

6 तुलिका, 2013. चतुरा द्वारा लिखित एवं रुचि द्वारा चित्रित

7 एकलव्य, 2011. जितेन्द्र ठाकुर द्वारा चित्रित एक बुन्देलखंडी लोककथा

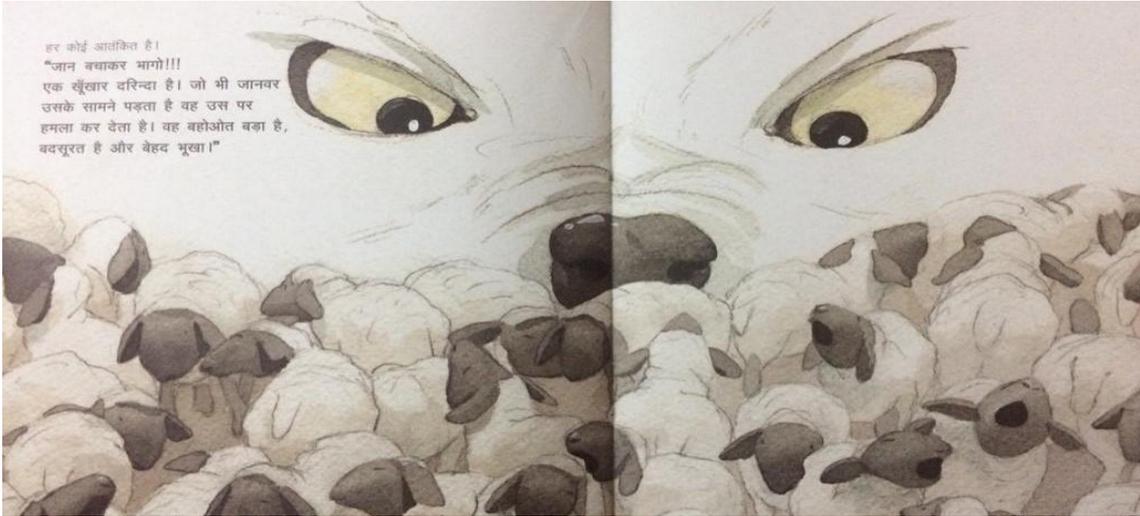
नबिया में हल्का वॉटर कलर खूबसूरती से मानसून में गन्दी बस्ती को चित्रित करता है और धुंधला और उदासीन अनुभूति उत्पन्न करता है; जबकि गीत का कमाल में गाढ़ा आदिवासी-सदृश चित्रण लोककथा का दृश्य स्थापित करता है।

माहौल, मनोदशा और भावना दर्शाने के लिए चित्रकार रंगों, आकृतियों आदि का कैसे उपयोग करते हैं इस मामले में सांस्कृतिक भिन्नता हो सकती है। शिक्षकों को यदि इस प्रकार की कला का एक्सपोजर नहीं है तो वे इन जानकारियों से अनभिज्ञ भी हो सकते हैं। इसलिए, अपने छात्रों के साथ पिक्चर बुक के इन तत्वों पर चर्चा करने से पहले इनका अध्ययन करना बेहतर होगा।

### डिज़ाइन के तत्व

पाठ और चित्र को पेज पर संवारने के ढंग से पुस्तक का रंग-रूप ही बदला जा सकता है। इन्हें डिज़ाइन के तत्व कहा जाता है। आप डिज़ाइन के बुनियादी तत्वों, जैसे पेज ले आउट, पॉइंट ऑफ व्यू या चित्र प्रदर्शित करने के तरीके आदि के उपयोग की ओर छात्रों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। कुछ उदाहरणों के साथ हम इनको जानने की कोशिश करते हैं –

**पेज ले-आउट** – चित्रों को एक पेज पर रखा जा सकता है या दो पेजों में भी फैलाया जा सकता है। इसी को पेज ले आउट कहा जाता है। पुस्तक में पेज ले-आउट की विविधता नया दृश्य प्रभाव पैदा कर सकती है। उदाहरण के लिए, *भेड़िये को दुष्ट क्यों कहते हैं?*<sup>8</sup> में लेखक-चित्रकार क्वेंटिन ग्रेबन पूरी क़िताब में सिंगल पेज ले-आउट का इस्तेमाल करते हैं, सिवाय एक जगह को छोड़कर जो कि चित्र 8 में दिखाया गया है। कहानी के इस मोड़ पर भेड़िये की दुष्टता के बारे में अफ़वाहें अपने चरम पर पहुँच जाती है और चित्र में साफ़ दिखता है कि अन्य जानवर उसके बारे में कैसे महसूस करते हैं – एक डरावनी उपस्थिति।

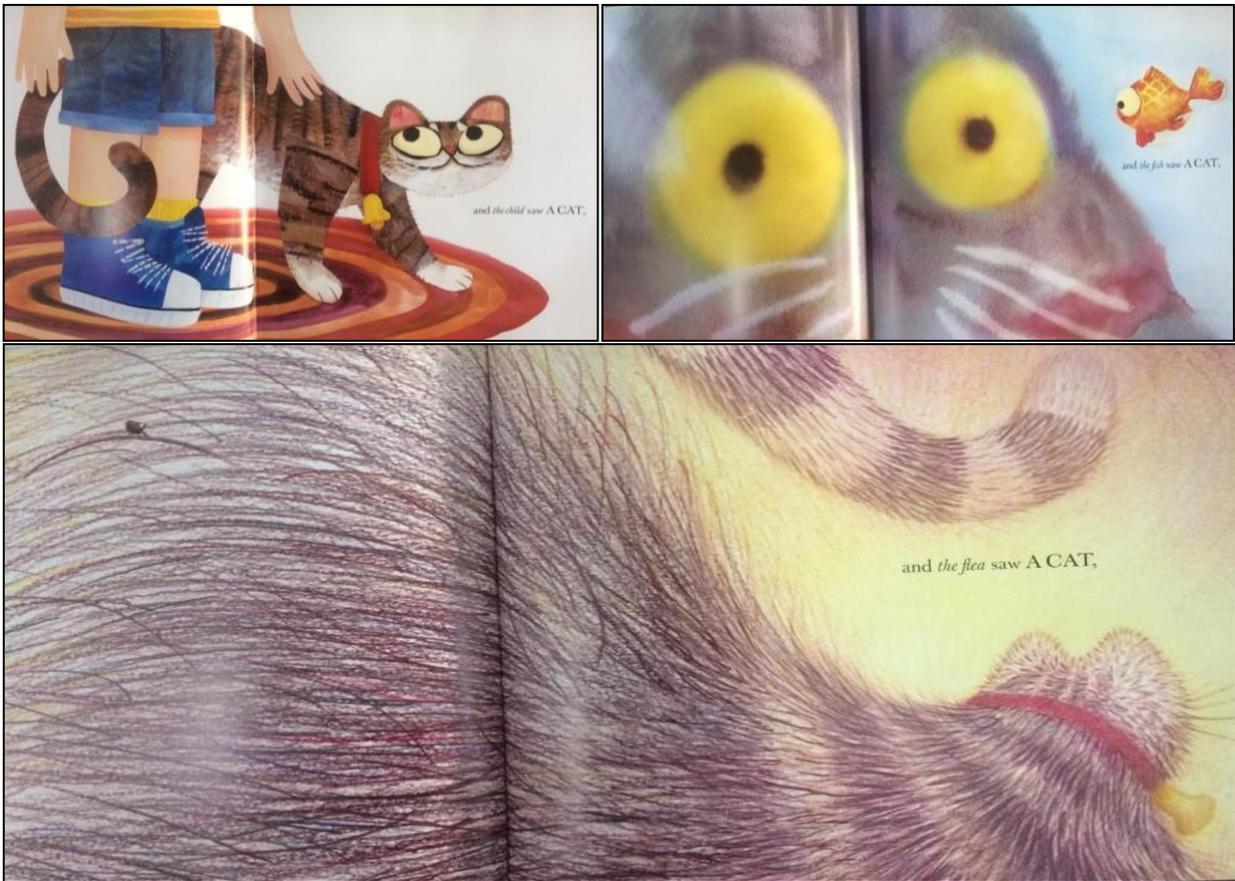


चित्र 8 भेड़िये को दुष्ट क्यों कहते हैं? से दो-पेज वाला ले आउट डिज़ाइन

8 एकलव्य, 2011 द्वारा प्रकाशित हिंदी संस्करण *भेड़िये को दुष्ट क्यों कहते हैं?* अंग्रेज़ी में, क्वेंटिन ग्रेबन द्वारा लिखित एवं ज्योत्सना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित , 2011

दृष्टिकोण (पॉइंट ऑफ़ व्यू) और दूरी – दृष्टिकोण (पॉइंट ऑफ़ व्यू) या परिप्रेक्ष्य का अर्थ है देखने वाला चित्र को किस स्थिति से देख रहा है (साइप, 2011)। उदाहरण के लिए, आप किसी भी दृश्य को ऊपर से, साइड से या वयस्कों की दुनिया को बच्चे के नज़रिये से देख सकते हैं।

चित्रकार अक्सर दृश्यात्मक रोचकता को बनाए रखने के लिए या कहानी में विभिन्न पात्रों के दृष्टिकोण को दिखाने के लिए पूरी किताब में कई प्रकार के परिप्रेक्ष्य का उपयोग करते हैं। *They All Saw a Cat* (चित्र 9) के चित्रण भिन्न-भिन्न परिप्रेक्ष्य के शानदार उदाहरण हैं। जैसा कि आप चित्र में देख सकते हैं कि एक लड़का, एक मछली और एक पिस्सू अलग-अलग स्थानों से एवं बिल्ली के साथ अपने पूर्व अनुभव के आधार पर उसी एक बिल्ली को कैसे अलग-अलग देखते हैं। दृष्टिकोण और दूरी पर चर्चा करते हुए आप छात्रों का ध्यान इस ओर खींच सकते हैं कि चित्रकार ने अलग-अलग दूरी और दृष्टिकोण दिखाने के लिए किस तरह आकार और अनुपात में हेर फेर किए हैं।

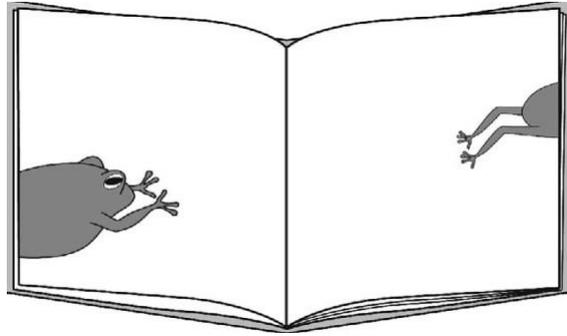


चित्र 9. *They All Saw a Cat* से चित्र

9 क्रोनिकल बुक्स, 2016. ब्रेंडन वेन्ज़ेल द्वारा लिखित और चित्रित

**प्रदर्शन (डिस्प्ले) और फ्रेमिंग**

फ्रेमिंग चित्रण में किसी आकृति को फ्रेम में प्रवेश करते हुए या फ्रेम से बाहर जाते हुए प्रस्तुत कर गतिशीलता का बोध कराता है। इससे यह जानने की उत्सुकता भी पैदा होती है कि आगे क्या होगा और हम पन्ना पलटने के लिए विवश हो जाते हैं। चित्र 10 में मातुलका (2008, p. 116) से एक उदाहरण प्रस्तुत है



चित्र 10 फ्रेमिंग का उदाहरण

**पैनल** –पैनल के माध्यम से चित्रकार किसी कार्य की क्रमिकता, गतिशीलता, समय परिवर्तन दिखाने के लिए या किसी पात्र के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने के लिए चित्रों को कई भागों में तोड़ता है। नीचे **अम्माची के चश्में**<sup>10</sup> में पैनल के माध्यम से अम्माची के जागने और अपना चश्मा खोजने को क्रमिकता में चित्रित किया गया है। एक ही दृश्य में, यह पेज कहानी में आगे क्या होगा इसकी पृष्ठभूमि तैयार करता है।



चित्र 11. 11. अम्माची के चश्में से लिया गया पैनल

<sup>10</sup> तुलिका, 2017. प्रिय कुरियन द्वारा निर्मित शब्द रहित पिकचर बुक

**अधूरे चित्र (Half-complete actions )**-चित्रकार अधूरे चित्र के माध्यम से नाटकियता और रहस्य उत्पन्न कर सकते हैं (मातुलका, 2008) । चित्र-3 में *Rosie's Walk* में लोमड़ी को रोजी नाम के मुर्गी पर झपटते हुए दिखाना इसका उदहारण है । चित्र 3 यह 'अब आगे क्या होगा?' वाला रोमांच भी पैदा करता है। हैरोल्ड की बैंगनी पेंसिल के कई चित्रों में भी इस तकनीक का इस्तेमाल किया गया है । हैरोल्ड जो भी बनाता है वह वास्तविकता में बदल जाता है । कई पेज में (चित्र 12 देखें), पर्याप्त जगह होने के बावजूद उसे अधूरी चीजें बनाते हुए दिखाया गया है ताकि उनके बारे में मजेदार अनुमान लगाया जा सके । आप इस बात की छानबीन कर सकते हैं कि क्या ऐसे तत्व छात्रों को पढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं ।

..



चित्र 12 हैरोल्ड की बैंगनी पेंसिल से चित्र

चित्रों पर चर्चा करते समय सभी पहलुओं पर चर्चा करना बहुत कठिन है ,फिर भी छात्रों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कुछ चुनिन्दा तत्वों को सरल तरीके से समझाया जा सकता है । जब आप इन तत्वों को स्पष्ट करते हैं तो चित्रों/चित्रण के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को साझा करें । इससे छात्रों का ध्यान चित्रों की तरफ खींचने में मदद मिलेगी और वे यह भी देख पाएंगे कि ये किताब को समझने में किस तरह से मदद करते हैं। और उन्हें खुद की समझ को साझा करने के लिए नयी शब्दावली भी । इसके अलावा , उन्हें अपनी प्रतिक्रिया साझा करने के लिए शब्दावली भी मिलेगी

**Adapted from ELI Handout 4 (2019):” Reading Illustration in Picture Books”**

<sup>11</sup> Hindi translation published by BGVS, 2007. Original title 'Harold and the Purple Crayon' written and illustrated by Crockett Johnson (HarperCollins Children's Books, 1981).

## References

- Bang, M. (2000). *Picture this: How pictures work*. San Francisco: Chronicle Books.
- Matulka, D. I. (2008). *A picture book primer: Understanding and using picture books*. Westport: Libraries Unlimited.
- Menon, S., Krishnamurthy, R., Sajitha, S., Apte, N., Basargekar, A., Subramaniam, S., & Modugala, M. (2017). *Literacy research in Indian languages (LiRIL): Report of a three-year longitudinal study on early reading and writing in Marathi and Kannada*. Azim Premji University.
- Schwarcz, J., & Schwarcz, C. (1991). *The picture book comes of age*. Chicago, IL: American Library Association.
- Sipe, L. R. (2001). Picture books as aesthetic objects. *Literacy Teaching and Learning*, 6(1), p. 23-42.
- Wolf, S.A. (2004). *Interpreting literature with children*. New Jersey: Lawrence Erlbaum Associate Publishers.

**Author:** Akhila Pydah

**Conceptual Support and Editing:** Shailaja Menon

**Copy-Editing:** Chetana Divya Vasudev

**Layout and Design:** Harshita V. Das